Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# की कुछ सार बातें

क— श्रीजयदयाल गोयन्दका

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रकाशक—**गोविन्दभवन-कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर**

| | |
|---|---|
| सं० २००९ से २०४३ तक | ३,३५,००० |
| सं० २०४५ उन्नीसवाँ संस्करण | ५०,००० |
| कुल | ३,८५,००० |

(तीन लाख पचासी हजार)

**मूल्य चालीस पैसे**

मुद्रक—**गीताप्रेस, गोरखपुर**

पता—**गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)**

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीहरिः

# सत्संगकी कुछ सार बातें

लेखक

जयदयाल गोयन्दका

२०२५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीहरिः

# सत्संगकी कुछ सार बातें

१. मनुष्य-जीवनके समयको अमूल्य और क्षणिक समझकर उत्तम-से-उत्तम काममें व्यतीत करना चाहिये । एक क्षण भी व्यर्थ नहीं बिताना चाहिये ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



२. यदि किसी कारणवश कभी कोई क्षण भगवत्-चिन्तनके बिना बीत जाय तो उसके लिये पुत्रशोकसे भी बढ़कर घोर पश्चात्ताप करना चाहिये, जिससे फिर कभी ऐसी भूल न हो ।

३. जिसका समय व्यर्थ व्यय होता है, उसने समयका मूल्य समझा ही नहीं ।

४. मनुष्यको कभी निकम्मा नहीं रहना

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



चाहिये; अपितु सदा-सर्वदा उत्तम-से-उत्तम कार्य करते रहना चाहिये ।

५. मनसे भगवान्‌का चिन्तन, वाणीसे भगवान्‌के नामका जप, सबको नारायण समझकर शरीरसे जगज्जनार्दनकी निःस्वार्थ सेवा-यही उत्तम-से-उत्तम कर्म है ।

६. बोलनेके समय बहुत विचारकर सत्य, प्रिय, मित और हितके वचन बोलने चाहिये ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



७. अपने दोषोंको सुनकर चित्तमें प्रसन्नता होनी चाहिये ।

८. यदि कोई हमारा दोष सिद्ध करे तो उसके लिये जहाँतक हो, सफाई नहीं देनी चाहिये; क्योंकि सफाई देनेसे दोषोंकी जड़ जमती है तथा दोष बतलानेवालेके चित्तमें भविष्यके लिये रुकावट होती है । इससे हम निर्दोष नहीं हो पाते ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



९. यदि हम निर्दोष हैं तो हमें मौन हो जाना चाहिये, इससे हमारी कोई हानि नहीं है और यदि सदोष हैं तो अपना सुधार करना चाहिये ।

१०. दोष बतलानेवालेका गुरु-तुल्य आदर करना चाहिये, जिससे भविष्यमें उसे दोष बतलानेमें उत्साह हो ।

११. अपने निकट-सम्बन्धीका दोष सहसा नहीं कहना चाहिये, कहनेसे उसको दुःख

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



हो सकता है; जिससे उसका सुधार सम्भव नहीं ।

१२. यदि कहीं किन्हींसे काम लेना हो तो उनको अपने पास न बुलाकर उन्हींके पास जाना चाहिये ।

१३. सादगीसे रहना चाहिये ।

१४. स्वावलम्बी बनना चाहिये ।

१५. जीवनको अधिक खर्चीला नहीं बनाना

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



चाहिये । ऋषि-मुनियोंका जीवन खर्चीला नहीं था । अधिक खर्चीला जीवन मनुष्यको रुपयोंका दास बना देता है, जिसके कारण अनेक पाप करने पड़ते हैं ।

१६. शरीर-निर्वाहके लिये भी अनासक्त भावसे ही पदार्थोंका उपयोग करना चाहिये ।

१७. भोजनके समय स्वादकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिये; क्योंकि वह पतनका हेतु है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



स्वास्थ्यकी ओर लक्ष्य रखना भी वैराग्यमें कमी ही है ।

१८. कल्याणकामी पुरुषको तो वैराग्य-युक्त चित्तसे केवल शरीर-निर्वाहके लिये ही भोजन करना चाहिये ।

१९. व्यवहारके समय भजन-ध्यानमें मुख्य वृत्ति और संसारी कामोंमें गौण-वृत्ति रखनी चाहिये ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



२०. सोते समय भी भगवान्‌का स्मरण विशेषतासे करना चाहिये, जिससे शयनका समय व्यर्थ न जाय ।

२१. शयनके समयको साधन बनानेके लिये सांसारिक संकल्पोंके प्रवाहको भुलाकर भगवान्‌के नाम, रूप, गुण, प्रभाव और चरित्रका चिन्तन करते हुए ही सोना चाहिये ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



२२. अपने ऊपर भगवान्‌की अहैतुकी दया और प्रेम समझ-समझकर हर समय प्रसन्न रहना चाहिये ।

२३. एकान्तमें मनको सदा यही समझाना चाहिये कि परमात्माके सिवा किसीका भी चिन्तन न करो; क्योंकि व्यर्थ चिन्तनसे बहुत हानि है ।

२४. एकान्तके भजनको मूल्यवान् बनानेके

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



लिये उसे श्रद्धा-भक्तिपूर्वक निष्कामभावसे नित्य-निरन्तर करनेका प्रयत्न करना चाहिये ।

२५. भगवत्प्राप्तिके लिये मनुष्यको पात्र बनना चाहिये । पात्र बननेपर भगवान् स्वयं ही दर्शन दे सकते हैं ।

२६. सुननेवालोंकी इच्छाके बिना वक्ताको सत्संगके रहस्यकी बातें नहीं सुनानी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



चाहिये ।

२७. जहाँ व्याख्यानदाता बहुत हों, वहाँ जहाँतक हो व्याख्यान न दे ।

२८. ऊँचे आसन और ऊँचे पदसे सदा ही दूर रहना चाहिये ।

२९. जहाँतक हो, गुरु बननेकी इच्छा कभी न करे ।

३०. किसी सम्बन्धीकी मृत्यु-सूचना मिलने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पर, जहाँ आवश्यकता हो, वहाँ जाना चाहिये; किंतु अपने घरमें किसीके मरनेपर, जहाँतक हो, दूरस्थ कुटुम्बियोंको आनेके लिये सभ्यतापूर्वक मना कर देना चाहिये ।

३१. दहेज और दान देना चाहिये । किंतु जहाँतक हो,लेनेसे बचना चाहिये ।

३२. जहाँतक हो, पंच न बनना चाहिये ।

३३. जहाँतक हो, सगाई (वाग्दान) - विवाह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आदि सम्बन्ध करानेके कामसे दूर रहना चाहिये ।

३४. ब्राह्ममुहूर्तमें उठना चाहिये । यदि सोते-सोते ही सूर्योदय हो जाय तो दिनभर उपवास और जप करना चाहिये ।

३५. संध्या, गायत्रीजप, ध्यान, पूजा-पाठ, स्तुति, प्रार्थना, नमस्कार आदिके अर्थ और

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



भावको समझते हुए ही निष्कामभावसे श्रद्धा-भक्ति-पूर्वक सदा-सर्वदा करना चाहिये ।

३६. भगवत्प्राप्तिके साधनमें पवित्र और एकान्त देशका सेवन, सत्संग और स्वाध्याय, परमात्माका ध्यान और उसके नामका जप, उपरति और वैराग्य—इनके समान कोई भी सहायक नहीं है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



३७. द्विजातिमात्रको उचित है कि नित्य सूर्योदय और सूर्यास्तसे पूर्व ही संध्योपासन और गायत्री-जप करे ।

३८. भगवान्‌के नाम-रूपको याद रखते हुए ही सामाजिक, व्यावहारिक, आर्थिक आदि कार्य न्यायपूर्वक निःस्वार्थभावसे करे; क्योंकि अपनी सारी चेष्टा निःस्वार्थभावसे दूसरेके हितके लिये

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



करनेसे ही कल्याण होता है ।

३९. स्नान और नित्यकर्म किये बिना दातुन और जलके सिवा कुछ भी मुखमें न ले ।

४०. श्रीभगवान्‌के भोग लगाकर तथा यथाधिकार बलिवैश्वदेव करके ही भोजन करे ।

४१. तुलसीदलके सिवा चलते-फिरते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



या खड़े हुए भी कोई भी चीज कभी न खाय ।

४२. भोजनके आदि और अन्तमें आचमन करे ।

४३. एकान्तमें दो आदमी बात करते हों तो उनकी सम्मतिके बिना वहाँ न जाय ।

४४. जीवहिंसाको बचाता हुआ चले ।

४५. घी, शहद, तेल, जल आदि तरल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पदार्थ छानकर काममें ले ।

४६. कर्तव्यका पालन न होनेपर तथा अपनेसे बुरा काम बन जानेपर पश्चात्ताप करे, जिससे कि फिर कभी वैसा न हो ।

४७. कर्तव्यकर्मको झंझट मान लेनेपर वह भार-रूप हो जाता है, विशेष लाभदायक नहीं होता ।

४८. वही कर्म भगवान्‌को याद रखते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



हुए प्रसन्नतापूर्वक मुग्ध होकर किया जाय तो बहुत ऊँचे दर्जेका साधन बन जाता है ।

४९. अकर्मण्यता (कर्तव्यसे जी चुराना) महान् हानिकारक है । पापका प्रायश्चित्त है, किंतु इसका नहीं । अकर्मण्यताका त्याग ही इसका प्रायश्चित्त है ।

५०. कर्तव्यपालनरूप परम पुरुषार्थ अर्थात् भगवत्-शरणापन्न होकर प्रयत्न करना ही

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



मुक्तिका मुख्य साधन है ।

५१. धनका प्राप्त होना यद्यपि अपने वशकी बात नहीं है, तथापि मनुष्यको शरीरनिर्वाहिके लिये कर्तव्यबुद्धिसे न्याययुक्त परिश्रम करना चाहिये ।

५२. सुख-दुःख आदिके प्राप्त होने-पर उनको भगवान्‌का मङ्गल-विधान समझकर हर समय परम संतुष्ट रहना

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



चाहिये ।

५३. उत्तम कामको शीघ्रातिशीघ्र करनेकी चेष्टा करे, क्योंकि शरीरका कोई भरोसा नहीं है ।

५४. जिससे हिंसा होती हो, ऐसी किसी चीजको व्यवहारमें न लावे ।

५५. रेशम और तूष काममें न ले ।

५६. हिंसायुक्त होनेके कारण शहद,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



मृग-चर्म और कस्तूरी काममें न ले ।

५७. जहाँतक हो, मिलकी बनी चीजें खानेके काममें न ले ।

५८. ईश्वरकी सत्तापर प्रत्यक्षसे बढ़कर विश्वास रखे; क्योंकि ईश्वरपर जितना प्रबल विश्वास होगा, साधक उतना ही पापसे बचेगा और उसका साधन तीव्र होगा ।

५९. सदा-सर्वदा ईश्वरपर निर्भर रहना

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



चाहिये । इससे धीरता, वीरता, गम्भीरता, निर्भयता और आत्मबलकी वृद्धि होती है ।

६०. ईश्वर-प्रेम एक बहुत गोपनीय परम रहस्यकी वस्तु है । उससे बढ़कर संसारमें कोई उत्तम वस्तु नहीं ।

६१. ईश्वरके ज्ञानके समान कोई ज्ञान नहीं ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



६२. ईश्वरके प्रभावके समान कोई प्रभाव नहीं ।

६३. ईश्वरके दर्शनके समान कोई दर्शन नहीं ।

६४. महापुरुषोंके आचरणसे बढ़कर कोई अनुकरणीय आचरण नहीं ।

६५. भगवद्भावसे बढ़कर कोई भाव नहीं ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



६६. समतासे बढ़कर कोई न्याय नहीं ।
६७. सत्यके समान कोई तप नहीं ।
६८. परमात्माकी प्राप्तिके समान कोई लाभ नहीं ।
६९. सत्संगके समान कोई मित्र नहीं ।
७०. कुसंगके समान कोई शत्रु नहीं ।
७१. दयाके समान कोई धर्म नहीं, हिंसाके समान कोई पाप नहीं, ब्रह्मचर्यके

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



समान कोई व्रत नहीं, ध्यानके समान कोई साधन नहीं, शान्तिके समान कोई सुख नहीं, ऋणके समान कोई दुःख नहीं, ज्ञानके समान कोई पवित्र नहीं, ईश्वरके समान कोई इष्ट नहीं, पापीके समान कोई दुष्ट नहीं—इनमें एक-एक अपने-अपने स्थानपर अपने-अपने विषयमें सबसे बढ़कर प्रधान हैं ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



७२. कामीके साख नहीं, लोभीके नाक नहीं, क्रोधीके बाप नहीं, अज्ञानीके थाप नहीं, भक्तके शाप नहीं, नास्तिकके जाप नहीं, ज्ञानीके माप नहीं, अर्थात् इन लोगोंपर इन पदार्थोंका असर नहीं पड़ता ।

७३. गङ्गाके समान कोई तीर्थ नहीं, गौके समान कोई सेव्य नहीं, गीताके समान कोई शास्त्र नहीं, गायत्रीके समान

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कोई मन्त्र नहीं एवं गोविन्दके समान कोई देव नहीं ।

७४. गङ्गा-स्नान, गौकी सेवा, भाव और अर्थसहित गीताका अभ्यास, गायत्रीका जप और गोविन्दका ध्यान—इनमेंसे किसी एकका भी निष्काम-भाव और श्रद्धा-भक्तिपूर्वक सेवन करनेसे कल्याण हो सकता है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



७५. जिसने सत्य, अहिंसा, क्षमा, दया, समता, शान्ति, संतोष, तितिक्षा, त्याग आदि शस्त्र धारण कर रखे हैं, उसका कोई भी शत्रु किंचिन्मात्र भी अनिष्ट नहीं कर सकता ।

७६. आचरणोंके सुधारकी जड़ स्वार्थका त्याग है ।

७७. झूठसे बचनेके लिये जहाँतक हो,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



भविष्यके निश्चित वचन नहीं कहने चाहिये ।

७८. भगवान्‌की प्राप्तिके सिवा मनमें किसी भी बातकी इच्छा नहीं रखनी चाहिये; क्योंकि कोई भी इच्छा रहेगी तो उसके लिये पुनर्जन्म धारण करना पड़ेगा । इसलिये इच्छा, वासना, कामना, तृष्णा आदिका सर्वथा त्याग कर देना चाहिये ।

७९. बार-बार मनसे पूछ लो कि 'बतला,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



तेरी क्या इच्छा है ?' और मनसे यह उत्तर मिले कि 'कुछ भी इच्छा नहीं है ।' इस प्रकारके अभ्याससे इच्छाका नाश होता है । यह निश्चित बात है ।

८०. महात्माके हृदयमें किसी प्रकारकी भी इच्छा रहती ही नहीं, हमें भी उसी प्रकार बनना चाहिये ।

८१. संसारके किसी भी पदार्थसे प्रीति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



नहीं करनी चाहिये; क्योंकि प्रीति होनेसे अन्तकालमें उसका संकल्प हो सकता है । संकल्प होनेपर जन्म लेना पड़ता है ।

८२. सत्ता और आसक्तिको लेकर जो स्फुरणा होती है, उसीका नाम संकल्प है ।

८३. महात्मा पुरुषोंका पुनर्जन्म नहीं होता; क्योंकि उनके हृदयमें किसी प्रकारका भी किंचिन्मात्र संकल्प रहता ही नहीं ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



प्रारब्धके अनुसार केवल स्फुरणा होती है, जो कि सत्ता और आसक्तिका अभाव होनेके कारण जन्म देनेवाली नहीं है, तथा कार्यकी सिद्धि या असिद्धिमें उनके हर्ष-शोकादि कोई भी विकार लेशमात्र भी नहीं होते। यही संकल्प और स्फुरणाका भेद है।

८४. आसक्तिवाले पुरुषके मनके अनुकूल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



होनेपर राग और हर्ष तथा प्रतिकूल होनेपर द्वेष और दुःख होता है ।

८५. निन्दा-स्तुति आदि सुनकर जरा भी हर्ष-शोक, राग-द्वेष आदि विकार नहीं होने चाहिये ।

८६. कल्याणकामी मनुष्यको उचित है कि मान और कीर्तिको कलंकके समान समझे ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



८७. हर समय संसार और शरीरको कालके मुखमें देखे ।

८८. मरुभूमिमें जल दीखता है, वास्तवमें है नहीं । अतः कोई भी समझदार मनुष्य प्यासा होते हुए भी वहाँ जलके लिये नहीं जाता । इसी प्रकार संसारके विषयोंमें भी सुख प्रतीत होता है, वास्तवमें है नहीं । ऐसा जाननेवाले विरक्त विवेकी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पुरुषकी सुखके लिये उनमें प्रवृत्ति नहीं होती ।

८९. जीवन्मुक्त ज्ञानी महापुरुषोंकी दृष्टिमें संसार स्वप्नवत् है । इसलिये वे संसारमें रहकर भी संसारके भोगोंसे लिप्त नहीं होते ।

९०. जीते हुए ही जो शरीरको मुर्देके समान समझता है, वही मनुष्य जीवन्मुक्त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



है । अर्थात् जैसे प्राणरहित होनेपर शरीरसे कोई सम्बन्ध नहीं है, वही जीवन्मुक्त महाविदेही है ।

९१. श्रद्धालु मनुष्यके लिये तो महात्माका प्रभाव माने जितना ही थोड़ा है; क्योंकि महात्माका प्रभाव अपरिमेय है ।

९२. महापुरुषोंके प्रभावसे भगवान्‌की प्राप्ति होना—यह तो उनका अलौकिक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



प्रभाव है तथा सांसारिक कार्यकी सिद्धि होना—लौकिक प्रभाव है ।

९३. महापुरुषोंकी चेष्टा उनके तथा लोगोंके प्रारब्धसे होती है एवं लोगोंके श्रद्धा-प्रेम तथा ईश्वराज्ञासे भी होती है ।

९४. सर्वस्व जाय तो भी कभी किसी निमित्तसे कहीं किंचिन्मात्र भी पाप न करे, न करवावे और न उसमें सहमत

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ही हो ।

९५. पैसे न्यायसे ही पैदा करे, अन्यायसे कभी नहीं, चाहे भूखों ही मरना पड़े ।

९६. ईश्वरकी भक्ति और धर्मको कभी छोड़े ही नहीं, प्राण भले ही चले जायँ ।

९७. धैर्य, क्षमा, मनोनिग्रह, चोरी न करना, बाहर-भीतरकी पवित्रता, इन्द्रिय-निग्रह, सात्त्विकबुद्धि, अध्यात्मविद्या,

२०२८

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सत्यभाषण और क्रोध न करना—ये दस सामान्य धर्मके लक्षण हैं ।

९८. विपत्तिमें भगवान्‌की स्मृति बनी रहे, इसलिये कुन्तीने भगवान्‌से निरन्तर विपत्तिका वरदान माँगा ।

९९. पाण्डवोंने अपनेसे निम्न श्रेणीके राजा विराटकी नौकरी स्वीकार कर ली, पर धर्मका किंचिन्मात्र भी कभी त्याग नहीं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



किया ।

१००. महाराज युधिष्ठिरने स्वर्गको ठुकरा दिया, पर अपने अनुगत कुत्तेका भी त्याग नहीं किया ।

१०१. स्वार्थका त्याग समान व्यवहारसे भी श्रेष्ठ है, इसलिये निःस्वार्थभावसे सबकी सेवा करनी चाहिये ।

१०२. स्त्रीके लिये पातिव्रत्य-धर्म ही

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सबसे बढ़कर है । इसलिये भगवान्‌को याद रखते हुए ही पतिकी आज्ञाका पालन विशेषतासे करना चाहिये । तथा पतिके और बड़ोंके चरणोंमें नमस्कार करना और उन सबकी यथायोग्य सेवा करनी चाहिये ।

१०३. विधवा स्त्रीके लिये तो विषय-भोगोंसे वैराग्य, ईश्वरकी भक्ति, सद्‌गुण-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सदाचारका पालन और निःस्वार्थ-भावसे सबकी सेवा ही सर्वोत्तम धर्म है ।

१०४. दूसरोंको दुःख पहुँचानेके समान कोई पाप नहीं है और सुख पहुँचानेके समान कोई धर्म नहीं है । इसलिये हर समय दूसरोंके हितके लिये ही प्रयत्न करना चाहिये ।

१०५. कुटुम्ब, ग्राम, जिला, प्रान्त, देश,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



द्वीप, पृथ्वी और त्रिलोकीतक उत्तर-उत्तरवालेके हितके लिये पूर्व-पूर्ववालेके हितका त्याग कर देना चाहिये ।

१०६. किसीके भी दुर्गुण-दुराचारका श्रवण, मनन और कथन नहीं करना चाहिये । यदि उसमें किसीका हित हो तो कर सकते हैं; किंतु मन धोखा दे सकता है, अतः खूब सावधानीके साथ विचारपूर्वक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



करना चाहिये ।

१०७. किसीका उपकार करके उसपर अहसान न करे, न किसीसे कहे और न मनमें अभिमान ही करे, नहीं तो किया हुआ उपकार क्षीण हो जाता है । ऐसा समझे कि सब कुछ भगवान् ही करवाते हैं, मैं तो निमित्तमात्र हूँ ।

१०८. अनिष्ट करनेवालेके साथ बदलेमें

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बुराई न करे, उसे क्षमा कर दे; क्योंकि प्रतिहिंसाका भाव रखनेसे मनुष्य दोषका भागी होता है ।

१०९. यदि अनिष्ट करनेवालेको दण्ड देनेसे उसका उपकार होता हो तो ऐसी अवस्थामें उसे दण्ड देनेमें दोष नहीं है ।

११०. अपनेपर किये हुए उपकारको आजीवन कभी न भूले एवं अपना उपकार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



करनेवालेका बहुत भारी प्रत्युपकार करके भी अपने ऊपर उसका अहसान ही समझे ।

१११. अपने द्वारा किसीका अनिष्ट हो जाय तो भी सदा उसका हित ही करता रहे, जिससे कि अपने किये हुए अपराधको वह मनसे भूल जाय, यही इसका असली प्रायश्चित्त है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



११२. मन और इन्द्रियोंको इस प्रकार वशमें रखना चाहिये कि जिससे वे व्यर्थ और पापके काममें न जाकर जहाँ हम लगाना चाहें उसी कल्याण-मार्गपर लगी रहें ।

११३. ब्रह्मचर्यके पालनपर हरेक मनुष्यको विशेष ध्यान रखना चाहिये ।

११४. कामकी उत्पत्ति संकल्पसे होती है,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



स्त्री आदिके संगसे ब्रह्मचर्यका नाश होता है ।

११५. गृहस्थ मनुष्यको महीनेमें एक बारसे अधिक स्त्री-प्रसंग नहीं करना चाहिये । ऋतुकालपर महीनेमें एक बार स्त्री-प्रसंग करनेवाला गृहस्थ ब्रह्मचारीके तुल्य है ।

११६. जीते हुए मन-इन्द्रिय मित्रके समान हैं और न जीते हुए विषयासक्त मन-इन्द्रिय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



शत्रुके समान हैं ।

११७. शरीर और संसारमें जो आसक्ति है, वही सारे अनर्थोंकी मूल है, उसका सर्वथा त्याग करना चाहिये ।

११८. कोई भी सांसारिक भोग खतरेसे खाली नहीं है, इसलिये उससे दूर रहना चाहिये ।

११९. कञ्चन, कामिनी, मान, बड़ाई, ईर्ष्या,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आलस्य, प्रमाद, ऐश, आराम, भोग, दुर्गुण और पापको साधनमें महान् विघ्न समझकर इन सबका विषके तुल्य सर्वथा त्याग करना चाहिये ।

१२०. ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, सद्गुण, सदाचार, सेवा और संयमको अमृतके समान समझकर सदा-सर्वदा इनका सेवन करना चाहिये ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



१२१. शौचाचारसे सदाचार बहुत ऊँचा है, उससे भी भगवान्‌की भक्ति और भी ऊँचे दर्जेकी चीज है ।

१२२. भगवान् जाति-पाँति कुछ नहीं देखते, केवल प्रेम ही देखते हैं; अतः मनुष्यको केवल भगवान्‌से ही प्रेम करना चाहिये ।

१२३. ईश्वर, महात्मा, शास्त्र और परलोकमें

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



विश्वास करनेवाले पुरुषसे कभी पाप नहीं बन सकते । उसमें धीरता, वीरता, गम्भीरता, निर्भयता, समता और शान्ति आदि गुण अनायास ही आ जाते हैं, जिससे उसके सारे आचरण स्वाभाविक ही उत्तम-से-उत्तम होने लगते हैं ।

१२४. भगवान्‌के नाम, रूप, गुण, प्रभाव, तत्त्व, रहस्य और चरित्रोंको हर समय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



याद करते हुए मुग्ध रहना चाहिये ।

१२५. भगवान्‌के गुण, प्रभाव, चरित्र, तत्त्व और रहस्यकी बातें सुनने, पढ़ने और मनन करनेसे श्रद्धा होती है ।

१२६. एकान्तमें भगवान्‌के आगे स्तुति-प्रार्थना करते हुए रोनेसे भी श्रद्धा बढ़ती है ।

१२७. ऊपर बतलायी हुई बातोंपर विश्वास करके उसके अनुसार अनुष्ठान करनेसे भी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



श्रद्धा होती है ।

१२८. श्रद्धा होनेपर श्रद्धेय पुरुषकी छोटी-से-छोटी क्रियामें भी बहुत ही विलक्षण भाव प्रतीत होने लगता है ।

१२९. माता, पिता, पति, स्वामी, ज्ञानी, महात्मा और गुरुजनोंकी श्रद्धापूर्वक निःस्वार्थ सेवासे आत्माका शीघ्र कल्याण हो सकता है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



१३०. निष्कामकर्म और भगवान्‌के नाम-जपसे, धारणा और ध्यानसे एवं सत्संग और स्वाध्यायसे मल-विक्षेप और आवरणका सर्वथा नाश होकर भगवत्प्राप्ति शीघ्र हो सकती है ।

१३१. शीघ्र कल्याण चाहनेवाले मनुष्यको परमात्माकी प्राप्तिके सिवा और किसी भी बातकी इच्छा नहीं रखनी चाहिये; क्योंकि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



इसके सिवा सब इच्छाएँ जन्म-मृत्युरूप संसार-सागरमें भ्रमानेवाली हैं ।

१३२. परमात्माकी प्राप्तिके लिये मनुष्यको अर्थ और भावके सहित शास्त्रोंका अनुशीलन और एकान्तमें बैठकर जप-ध्यान तथा अध्यात्मविषयका विचार नियमपूर्वक नित्य ही करना चाहिये ।

१३३. अनिच्छा या परेच्छासे होनेवाली

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



घटनाको भगवान्‌का भेजा हुआ पुरस्कार मान लेनेपर काम-क्रोध आदि शत्रु पास नहीं आ सकते, जैसे सूर्यके सम्मुख अन्धकार नहीं आ सकता ।

१३४. जीव, ब्रह्म और मायाके तत्त्वको समझनेके लिये एकान्तमें बैठकर विवेक और वैराग्ययुक्त चित्तसे नित्यप्रति परमात्माका चिन्तन करते हुए अध्यात्म-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



विषयका विचार करना चाहिये ।

१३५. जिसने ईश्वरकी दया और प्रेमके तत्त्वरहस्यको जान लिया है, उसके शान्ति और आनन्दकी सीमा नहीं रहती ।

१३६. जो अपने-आपको ईश्वरके अर्पण कर चुका है और ईश्वरपर ही निर्भर है, उसकी सदा-सर्वदा सब प्रकारसे ईश्वर रक्षा करता है, इससे वह सदाके लिये निर्भय-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पदको प्राप्त हो जाता है ।

१३७. प्रेमपूर्वक जपसहित भगवान्‌के ध्यानका अभ्यास, श्रद्धापूर्वक सत्पुरुषोंका संग, विवेकपूर्वक भावसहित सत्-शास्त्रोंका स्वाध्याय, दुःखी, अनाथ, पूज्यजन तथा वृद्धोंकी निःस्वार्थ-भावसे सेवा—इनको यदि कर्तव्यबुद्धिसे किया जाय तो ये एक-एक साधन शीघ्र कल्याण

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



करनेवाले हैं ।

१३८. भगवान् बहुत बड़े दयालु और प्रेमी हैं । जो मनुष्य इसका तत्त्व समझ जायगा, वह भगवान्‌के शरण होकर शीघ्र ही परम शान्तिको प्राप्त हो जायगा ।

१३९. सर्वत्र भगवद्भावके समान कोई भाव नहीं है और सर्वत्र भगवद्भाव होनेसे दुर्गुण और दुराचारोंका अत्यन्त अभाव

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



होकर सद्गुण और सदाचार अपने-आप ही आ प्राप्त होते हैं ।

१४०. वस्तुमात्रको भगवान्‌का स्वरूप और चेष्टामात्रको भगवान्‌की लीला समझनेसे भगवान्‌का तत्त्व समझमें आ जाता है ।

2024

***

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## प्राप्ति-स्थान

## गीताप्रेसकी निजी दूकानें

१. गोविन्द-भवन-कार्यालय, १५१, महात्मागाँधी रोड, कलकत्ता-७, फोन-३८६८९४.
२. २६०९, नयी सड़क, दिल्ली-६, फोन-२६९६७८.
३. अशोक राजपथ, पटना-४.
४. २४/५५ बिरहाना रोड, कानपुर-९, फोन-६७२८२.
५. ५९/९ नीचीबाग, वाराणसी, फोन-६३०५०.
६. सब्जीमण्डी, मोतीबाजार, हरिद्वार.
७. गीताभवन, गंगापार, स्वर्गाश्रम-२४९३०४, फोन-१२२.

## अधिकृत दूकानें

१. गीताप्रेस पुस्तक प्रचार केन्द्र, बुलियन बिल्डिंग, जौहरी बाजार, जयपुर-३, फोन-४३३७९.
२. मोतीलाल श्यामसुन्दर, २५ श्रीरामरोड, लखनऊ-२२६०१८, फोन-४४५१३.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मिलनेका पता

गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस, (गोरखपुर)